

## क. व्यवस्था:

### ❖ स्वर्गीय निवासस्थान में व्यवस्था।

- यूहन्ना ने स्वर्गीय पवित्रस्थान को खुला हुआ देखा और उसमें वाचा का सन्दूक "दिखाई दिया" (प्रकाशितवाक्य 11:19)। क्या तब तक स्वर्गीय पवित्रस्थान का सन्दूक छिपा हुआ था? यह दर्शन क्या दर्शाता है?
- सन्दूक पूरे वर्ष "छिपा" रहता था, और केवल प्रायश्चित के दिन ही "देखा" जा सकता था (लैव्यव्यवस्था 16:2, 12-13)। उस दिन न्याय होता था, और पाप निश्चित रूप से समाप्त हो जाते थे (लैव्यव्यवस्था 16:30)।
- अपनी सांसारिक प्रति की तरह, सन्दूक में 10 आज्ञाएँ हैं, जिनके द्वारा हमारा न्याय किया जाएगा। इसमें दया का आसन भी शामिल है, जो दिव्य दया का प्रतीक है, जहां यीशु का खून हमारे पापों को ढकता है (1 पतरस 1:18-19; 1 यूहन्ना 2:2; भजन संहिता 85:10)।

### ❖ अनंत व्यवस्था।

- हालाँकि अब यह सुनना बहुत आम है कि यीशु ने क्रूस पर 10 आज्ञाओं को समाप्त कर दिया, यह सुधारकों की शिक्षा नहीं थी, न ही बाइबल यह सिखाती है।
- जब कि यह सच है कि, क्रूस पर, सांसारिक पवित्रस्थान से संबंधित नियम और संस्कारों की मान्यता समाप्त हो गयी, लेकिन नैतिक व्यवस्था के मामले में ऐसा नहीं था (इफिसियों 2:15)।
- परमेश्वर की व्यवस्था शाश्वत, असीम, परिपूर्ण है, और परमेश्वर द्वारा बनाए गए प्रत्येक बुद्धिमान प्राणी के व्यवहार को नियंत्रित करती है (भजन संहिता 19: 7; 119: 142; रोमियों 7: 7, 12, 16, 22, 25; 1 यूहन्ना 3:4)।
- वास्तव में, व्यवस्था शाश्वत है क्योंकि यह परमेश्वर के चरित्र का प्रतिबिंब है। (भजन संहिता 89:14; तुलना करें भजन संहिता 119:172बी, भजन संहिता 119:142बी)।

## ख. विश्रामदिन:

### ❖ विश्रामदिन का अर्थ।

- चौथी आज्ञा में दो कारणों से विश्रामदिन के पालन की आवश्यकता है: क्योंकि परमेश्वर ने हमें बनाया (निर्गमन 20:8-11); और क्योंकि उसने हमें छोड़ा (व्यवस्थाविवरण 5:12-15)।
- हमारे लिए, विश्रामदिन हमारे सृष्टिकर्ता की प्रशंसा करने के लिए सप्ताह में एक विराम है; उसके छुटकारा देने वाले प्रेम पर ध्यान करो; और नई सृष्टि में उसके साथ रहने के उसके वादे को याद रखें। यदि इस तरह से समझें तो, विश्रामदिन हमारे लिए हमारे परमेश्वर का एक विशेष आशीर्वाद है।
- दूसरी ओर, यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि जब हम उससे अलग हो गए तो उसने हमें छोड़ा नहीं। यह विश्राम का प्रतीक है, कार्यों का नहीं; अनुग्रह का, विधिवाद का नहीं; सुरक्षा का, निंदा का नहीं; हमें बचाने के लिए परमेश्वर पर हमारी निर्भरता का, न कि ऐसा करने के लिए हमारे अपने प्रयासों पर।
- विश्रामदिन का पालन करके, हम परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा और केवल उसकी आराधना करने की अपनी इच्छा प्रकट करते हैं।

### ❖ विश्रामदिन और अंत का समय।

- प्रकाशितवाक्य 13 दुनिया को परमेश्वर से दूर करने के लिए शैतान द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न शक्तियों का वर्णन करता है। इस अध्याय में सब कुछ पूजा से संबंधित है (प्रकाशितवाक्य 13:4, 8, 12, 15)।
- उल्लिखित शक्तियों में से एक सीधे दानियेल 7 के छोटे सींग से संबंधित है, जो समय और व्यवस्था को बदलना चाहता है (प्रकाशितवाक्य 13:5; दानियेल 7:25 - 42 महीने की अवधि एक समय और समयों, और आधे समय के समान है)।
- इस शक्ति ने दूसरी आज्ञा (मूर्तियों की पूजा) को रद्द कर दिया, और चौथी आज्ञा (आराधने के समय) को बदल दिया, शनिवार की पवित्रता को रविवार में स्थानांतरित कर दिया।
- अंतिम क्षणों में, वह खरीदने और बेचने पर रोक लगाकर [विश्रामदिन की निषिद्ध गतिविधियाँ] (प्रकाशितवाक्य 13:14-17) एक "मूर्ति" की पूजा करने के लिए मजबूर करेगा। यह "पशु की छाप" एक प्रतीक है जो हमें उन लोगों के बारे में बताता है जो परमेश्वर द्वारा स्थापित शनिवार के बजाय मनुष्य द्वारा स्थापित रविवार को आराधना के दिन के रूप में स्वीकार करेंगे।

## ग. व्यवस्था, विश्रामदिन और आराधना।

- ❖ अंत के समय के दौरान घोषित किया जाने वाला त्रिस्तरीय संदेश आराधना से जुड़ा है और इसलिए, विश्रामदिन और परमेश्वर की व्यवस्था से जुड़ा है।
  - पहला संदेश (प्रकाशितवाक्य 14:6-7): न्याय के लिए तैयार रहें (जिसका मानक व्यवस्था है), और सृष्टिकर्ता की आराधना करें (जैसा कि विश्रामदिन हमें याद दिलाता है)
  - दूसरा संदेश (प्रकाशितवाक्य 14:8): परमेश्वर की झूठी आराधना करने वाली धार्मिक व्यवस्थाओं से दूर हो जायें
  - तीसरा संदेश (प्रकाशितवाक्य 14:9-11): तय करें कि किसकी और कैसे आराधना करनी है: परमेश्वर की, विश्रामदिन का पालन करके; या शत्रु की, उसकी छाप को स्वीकार करते हुए
- ❖ उन महत्वपूर्ण क्षणों में आज्ञाओं का पालन करने के लिए, उन्हें यीशु का विश्वास प्राप्त करने की आवश्यकता है: अटल; गहरा; कार्यों में प्रदर्शित; अजेय विश्वास।